B.A Part-II Psychology (Subsidiary)
Teacher - A.K. Sinha
Topic - Topographical Aspects of Mind

पृष्ठ-1

Freud अपने मनोविश्लेषण के सिद्धांतों के आधार पर व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं की जानकारी और मन की गत्यात्मकता की व्याख्या मन के आकारात्मक पहलुओं द्वारा की है। इस सम्बन्ध में Freud का कहना है कि :-

"Topographical aspects of mind is that where does the dynamics of the conflicting situation occur."

Freud के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि आकारात्मक पहलू का तात्पर्य मन के उस पहलू से है, जहाँ संघर्षमय परिस्थिति की गत्यात्मकता उत्पन्न होती है, अर्थात मन के गत्यात्मक शक्तियों के बीच संघर्षों का परिणाम ही मन का आकारात्मक पहलू है। Brown ने भी मन के आकारात्मक पहलू को इसी रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि :-

"मन का आकारात्मक पहलू वह है जहाँ संघर्षमय परिस्थितियों की गत्यात्मकता उत्पन्न होती है।"

Freud ने मन के आकारात्मक पहलू को निम्नांकित तीन भागों में बाँटा है :-

(A) चेतन (Conscious),
(B) अर्धचेतन (Sub-Conscious),
(C) अचेतन (Unconscious)।

(A) - चेतन (Conscious) :- Freud का मानना है कि चेतन का सम्बन्ध तात्कालिक अनुभव ज्ञान से है। चेतन स्तर में जैसी इच्छाएँ, विचार एवं अनुभव होते हैं उनका तात्कालिक ज्ञान व्यक्ति को रहता है। Brown के शब्दों में :-

"Conscious is that segment of mind which is concerned with immediate awareness."

इस प्रकार तत्काल अर्थात वर्तमान समय में व्यक्ति जिन इच्छाओं, अनुभवों तथा विचारों आदि के बारे में अवगत रहता है वे सब चेतन भाग का विषय होता है। जैसे कक्षा में उपस्थित शिक्षक के बारे में जो अनुभव मन में होता है, वही चेतन है। इसकी विशेषताएँ निम्नांकित हैं :-

(i) चेतन (Conscious) मन का सबसे छोटा भाग होता है।
(ii) इसमात्र के बारे में व्यक्ति को पूर्ण ज्ञान भरा रहता है।
(iii) इस भाग में वर्तमान की घटनाओं की स्मृतियाँ रहती हैं।

शेष पृष्ठ-2 पर

जिसे आसानी से पुनः स्मृति में लाया जा सकता है।

(IV) चेतन मन का बाह्य जगत की वास्तविकताओं के साथ सीधा का सम्बन्ध होता है।

(V) चेतन मन व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदर्शों का भण्डार होता है।

(VI) चेतन मन अर्धचेतन तथा अचेतन पर प्रतिबन्ध का काम करता है। भावों चेतन व्यक्ति की वर्तमान चेतना को कहते हैं।

B — अर्धचेतन (Sub-Conscious) :— मन का यह आकारात्मक पहलू चेतन और अचेतन के बीच का भाग होता है। मन के इस भाग का विषय न तत्काल चेतन में रहता है और न अचेतन में। थोड़ा प्रयास करने पर इस भाग के भाव, विचार आदि को चेतन भाग में लाया जा सकता है। ये बातें चेतन की अनुपस्थिति और समय के लिए विस्मृत हो जाती हैं जिन्हें वापस लाना सम्भव होता है।

Brown के शब्दों में :—

("That segment of mind where The readily recallable is to be located is called fore-conscious.")

अर्धचेतन (Sub-conscious) को ही अग्रचेतन (Fore-conscious) या पूर्वचेतन (Pre-Conscious) कहा जाता है। यह चेतन तथा अचेतन भाग का सीमारेखा होता है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(i) (Sub-conscious) अर्धचेतन चेतन तथा अचेतन के बीच का भाग होता है।

(ii) अर्धचेतन (Sub-conscious) मन का छोटा भाग होता है।

(iii) इसके विषय का तात्कालिक ज्ञान व्यक्ति को नहीं रहता है, परन्तु थोड़ा सा प्रयास द्वारा उसे पुनः स्मृति में (चेतन) लाया जा सकता है।

(IV) अर्धचेतन (Sub-conscious) तथा चेतन (Conscious) का प्रतिबन्धक कमजोर होता है। यही कारण है कि अर्धचेतन के विषय को हल्के प्रयास के बाद चेतन (Conscious) में लाया जाता है।

शेष पृष्ठ - 3 पर

(C) अचेतन (Unconscious) :— यह मन के आकारात्मक पहलू का सबसे बड़ा भाग होता है। चेतन (Conscious) की जिन इच्छाओं, विचारों तथा अनुभूतियों की पूर्ति नहीं होती है वे दमित होकर इसी भाग में संग्रहित होते रहते हैं। अत: इनके विषय को अधिकाधिक प्रयास के बावजूद भी पुन: स्मृति में नहीं लाया जा सकता है। इस प्रकार अचेतन मन की चेतना व्यक्ति को नहीं रहता है। Freud के अनुसार अचेतन मन का वह भाग है ~~जिस~~ जिसके विचारों, अनुभवों आदि को पुन: चेतना में नहीं लाया जा सकता है। वे या तो स्वत: दैनिक क्रिया कलापों में आते हैं अथवा सम्मोहन (Hypnosis), मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) विधि द्वारा उन्हें जाना जा सकता है।

Brown ने Freud के अचेतन (Unconscious) मन के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि:—

"......But we all have experienced material which we can not recall at will, but whic may occur to us automatically and which we know is present in our minds through hypnosis and other experimental proceduures. This segment of the mind is the Freudian unconscious."

प्राचीन ~~धार्मिक~~ दार्शनिकों के अनुसार अचेतन विचारों का भंडार होता है और अचेतन के विचार बराबर चेतन मन में आने की चेष्टा करते रहते हैं। Freud ने इसी के विचारधारा के आधार पर अचेतन के सम्बन्ध में वैज्ञानिक एवं विस्तृत धारणा प्रस्तुत की है। इनके अनुसार भी अचेतन में व्यक्ति के संवेग, विभिन्न प्रकार के अनुभव स्वप्न का विचार या उनकी इच्छाएँ इत्यादि का भंडार होता है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन के प्रथम बचपन का ~~[illegible]~~ सम्बन्ध होता है परन्तु सामान्यत: व्यक्ति अहंकार में [illegible] भाग भी अज्ञात रहता है। ये अज्ञात होते हैं। परन्तु चेतन में आने के लिए सक्रिय रहते हैं। Freud ने इन अज्ञात विचारों को शब्द-शक्ति प्रवाह, संवेग या इच्छाएँ के नाम से सम्बोधित किया है। ये प्रवाह, संवेग या इच्छाएँ अचेतन मन कैसे आते इस सम्बन्ध में Freud ने निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत करते हैं।

शेष पृष्ठ-4 पर

पहला तथ्य यह है कि जिन विचारों की उत्पत्ति (Id) उपाहं द्वारा होती है उनका सम्बन्ध अचेतन मन से होता है। क्योंकि उपाहं की कुछ इच्छाएं चेतन में आने से पूर्व ही (Ego) अहं द्वारा अचेतन में दमित कर दिया जाता है जिसे प्राथमिक दमन के नाम से जाना जाता है।

दूसरा तथ्य Freud द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि अचेतन में कुछ ऐसे विचार या प्रकार भी दमित होते हैं जो कभी चेतना में थे परन्तु बाद उन्हें चेतन से दमित कर दिया जाता है इस प्रक्रिया को गौण दमन (Secondary repression) कहते हैं।

अतः दोनों प्रकार से दमित इच्छाएं, विचार असामाजिक अनैतिक तथा दूषित होते हैं जिसे व्यक्ति का पराहं (Super Ego) स्वीकार नहीं करता और वे अचेतन में दमित हो जाते हैं। अचेतन मन के निम्नांकित विशेषताएं होती हैं।

(i) (Unconscious) अचेतन मन का सबसे बड़ा भाग होता है।
(ii) अचेतन गत्यात्मक स्वरूप का होता है।
(iii) अचेतन का स्वरूप शैशव होता है।
(iv) यह (अचेतन) यौन स्वरूप का होता है।
(v) अचेतन सुख-दुःख के नियम से निर्देशित होता है।
(vi) अचेतन में उपाहं की प्रवृत्तियाँ रहती हैं।
(vii) अचेतन में बिना संघर्ष के परस्पर विरोधी इच्छाएं और विचार रहते हैं।
(viii) यह (अचेतन) व्यक्ति के नियंत्रण से परे होता है।
(ix) अचेतन अपनी इच्छाओं की पूर्ति स्वप्न के रूप में करता है।
(x) अचेतन (Unconscious) स्वप्न का एक कारक के रूप में कार्य करता है।